Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-12, Issue-1, June-2018

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. निलेश कुमार पटेल
प्राचार्य, विद्यासागर महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.)

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता का लिंगवार, अनुशासन वार एवं सामाजिक प्रष्ठभूमि के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शिक्षक, विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत होते हैं, अतः शिक्षकों का प्रभावशाली होना नितांत अनिवार्य है । व्यक्तिगत प्रभावशीलता के माध्यम से शिक्षक अपने वातावरण में ऐसा प्रभाव स्थापित कर लेता है कि विद्यार्थी, शिक्षक पर विश्वास कर अपने अनुभव सहजता से बांटते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए इंदौर शहर के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय द्वारा संचालित शिक्षा अध्ययनशाला से 63 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का प्रयोजनपरक न्यादर्श प्रतिचयन पद्धति के आधार चयन किया गया। प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण स्वतंत्र-परिक्षण के माध्यम से किया गया। परिक्षण के निष्कर्ष स्वरुप पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों, कला अनुशासन के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों एवं ग्रामीण प्रष्ठभूमि के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता क्रमशः स्त्री शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों, विज्ञान अनुशासन के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों एवं शहरी प्रष्ठभूमि के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों से अधिक पायी गयी।

मुख्य शब्द : व्यक्तिगत प्रभावशीलता, जोहरी विंडो, शिक्षक प्रशिक्षणार्थी।

प्रस्तावना

शिक्षक वह कलाकार होता है जो किसी भी देश का भविष्य गढ़ता है। शिक्षक विद्यार्थियों का आदर्श होता है तथा विद्यार्थी शिक्षक के प्रभाव, आचरण एवं शैली से

बहुत कुछ सीखते हैं। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान शिक्षकों के प्रमुख चुनौती यह होती है कि उसके समक्ष विभिन्न संस्कृतियों एवं विभिन्न सामाजिक आर्थिक प्रष्ठभूमि के विद्यार्थी होते हैं तथा यह शिक्षक की प्रतिबद्धता होती है कि वह सभी की अपेक्षाओं पर खरा उतरने का प्रयास करे। विद्यार्थियों के सर्वांगींण विकास के ध्येय की प्राप्ति के लिए भी यह आवश्यक है कि शिक्षक द्वारा स्वयं को किसी विषय-विशेष तक सिमित न करके विद्यार्थियों के विचारों, अनुभवों एवं प्रतिक्रियाओं को ध्यान से सुनना एवं उनसे अंतःक्रिया स्थापित करना चाहिए। यह अंतःक्रिया तभी विकसित हो सकती है जब विद्यार्थियों के समक्ष शिक्षक का प्रस्तुतीकरण प्रभावी हो।

शब्द-व्युत्पत्ति शास्त्र के अनुसार व्यक्तिगत प्रभावशीलता शब्द का निर्माण दो शब्दों क्रमशः 'व्यक्ति' एवं 'प्रभाव' से हुआ है। अतः व्यक्तिगत प्रभावशीलता से आशय है कि एक व्यक्ति के रूप में हम दूसरों पर कैसा प्रभाव स्थापित कर पाते हैं। क्या हम अपने आसपास उपस्थित लोगों में यह आत्म-विश्वास जगा पाते हैं कि वे हमसे सहज होकर बात कर सकें? क्या लोग हमसे अपने अनुभव या अपने विचार बांटना पसंद करते हैं? क्या लोग हमसे बात करने अरुचि या अनिच्छा रखते हैं? क्या लोग हमारी संभावित प्रतिक्रया से डरते हैं? क्या हम अपने आसपास के लोगों की भावनाओं को समझते हैं और उनकी भावनाओं के अनुकूल उनसे व्यवहार करते हैं? अपने वातावरण में उपस्थित लोगों के द्वारा हमसे साझा किये गए विचारों, अनुभवों, भावनाओं एवं व्यक्तिगत जानकारियां हमारी ग्रहणशीलता की ध्योतक होती है और यह हमारे द्वारा स्थापित प्रभाव के क्षेत्र को दर्शाती है। अतः व्यक्तिगत प्रभावशीलता किसी कार्य के संपादन के लिए हमारी दक्षता या योग्यता को नहीं बल्कि उचित कार्य का चयन कर उसे करना है। व्यक्तिगत प्रभावशीलता, व्यक्ति के आकर्षण का प्रभावक्षेत्र है। एक सफल एवं प्रभावी शिक्षक के लिए भी यह आवश्यक है कि वह अपने विद्यार्थियों का ध्यान अपने कार्यों एवं अपने अध्यापन की ओर आकर्षित करे।

व्यक्तिगत प्रभावशीलता के आयाम

व्यक्तिगत प्रभावशीलता के मूलतः चार आयाम होते हैं- आत्म जागरुकता (Self awareness), सहज अनुभूति (Perceptiveness), आत्म-प्रकटीकरण (Self-disclosure) एवं प्रतिपुष्टि (Feedback) ।

आत्म जागरुकता से अभिप्राय है कि हम स्वयं को कितना जानते हैं अधिकांश लोगों में यह भ्रम होता है की वे स्वयं के बारे में सब कुछ जानते हैं । परन्तु यदि व्यक्ति स्वयं स्वयं को ध्यान से देखे तो उसे स्वयं की कई अन्य विशेषताएँ भी दिखाई देती है । जब तक हम स्वयं को अच्छे से न जान लें तब तक यह आशा करना व्यर्थ है कि लोग हमें अच्छे से जान कर हमसे वैसा ही व्यवहार करेंगे जैसा हम चाहते हैं । हमें स्वयं की क्षमताओं एवं कमियों को स्वयं जानने का प्रयास करना चाहिए । ताकि हम विभिन्न परिस्थितियों में अपनी क्षमताओं का न्यायसंगत उपयोग कर उन्हें निखार सकें, साथ ही हम अपनी कमियों को दूर कर सकें । इस सन्दर्भ में जोसेफ लुफ्त (Joseph Luft) एवं हेरिंग्टन इन्घम (Harrington Ingham) द्वारा प्रस्तावित जोहरी विंडो (Johari window) का अध्ययन करना चाहिए । जोहरी विंडो एक ऐसी तकनीक है जो जिससे व्यक्ति को स्वयं के विषय में एवं अन्य लोगों से अपने सम्बन्ध के विषय में जानकारी प्राप्त करने में मदद मिलती है ।

	आपकी वे विशेषताएँ जो आप जानते हैं	आपकी वे विशेषताएँ जो आप नहीं जानते हैं
आपकी वे विशेषताएँ जो अन्य लोग जानते हैं	अनावृत्त / खुला क्षेत्र (Arena)	अंध बिंदु (Blind spot)
आपकी वे विशेषताएँ जो अन्य लोग नहीं जानते हैं	आवृत्त क्षेत्र (Closed Area)	अंध क्षेत्र (Dark Area)

जोहरी विंडो प्रतिमान

खुला क्षेत्र या एरिना में व्यक्ति की वे विशेषताएं होती है जिनके विषय में व्यक्ति स्वयं भी जानता है तथा अन्य लोग भी जानते हैं, जैसे व्यक्ति की उम्र,नाम, शारीरिक विशेषताएं, पता, स्थान आदि । अंध बिंदु या ब्लाइंड स्पॉट में व्यक्ति की ऐसी विशेषताएं होती है जिनके बारे में वह स्वयं नहीं जानता, परन्तु लोग जानते हैं । आवृत्त क्षेत्र या क्लोस एरिया में व्यक्ति की वे विशेषताएँ आती है जिनके बारे में न तो व्यक्ति स्वयं तो जानता है परन्तु वह लोगों के समक्ष कभी प्रकट नहीं करता अतः लोग नही जान पाते हैं । अंध क्षेत्र या डार्क एरिया में व्यक्ति की वे विशेषताएं

आती हैं जिनके विषय में वह स्वयं भी नही जानता एवं न ही अन्य लोग जान पाते हैं । आत्म जागरूकता के लिए व्यक्ति को अपनी उन विशेषताओं को जानने का प्रयास करना पड़ता है जिनके बारे में वह स्वयं नहीं जानता परन्तु लोग जानते हैं ।

सहज अनुभूति से आशय है शाब्दिक या अशाब्दिक माध्यम से अन्य व्यक्तियों के भावों, अपेक्षाओं या घटनाओं का सहज अनुमान लगा लेना जो अनुमान सामान्यतः अन्य लोग नहीं लगा पाते हैं। व्यक्ति को अपना प्रभाव क्षेत्र स्थापित या विकसित करने के लिए सहज अनुभूति की योग्यता अर्जित करना आवश्यक होता है। इसके लिए एक अच्छा श्रोता बनना एवं लोगों के विचार के साथ उनके हाव भाव, भाव- भंगिमाओं एवं मंतव्य को जानना आवश्यक होता है।

आत्म प्रकटीकरण से अभिप्राय है हम कितनी उन्मुक्तता या खुलेपन से स्वयं अपनी बातें या अनुभव लोगों के साथ साझा करते हैं। आत्म प्रकटीकरण का यह अर्थ कदापि नहीं है कि हम लोगो के समक्ष अपनी अनावश्यक बातें या अनुभव भी साझा करें। बल्कि विषय एवं परिस्थिति की मांग के अनुरूप अपनी बात या अनुभव साझा करने में हमें हिचक या संकोच नहीं होना चाहिए। वांछित या अपेक्षित जानकारियां उचित रूप में साझा कर व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत प्रभावशीलता का दायरा व्यापक कर सकता है।

प्रतिपुष्टि वे प्रतिक्रियाएं है जो हमें हमारे कार्य या व्यवहार या अंतःक्रिया के प्रतिसाद के रूप में प्राप्त होती हैं। सहज रूप में प्रतिपुष्टियों का स्वागत कर व्यक्ति अपने अंध बिंदु (blindspot) को कम कर अपने अनावृत्त या खुले क्षेत्र (एरिना) का विस्तार कर सकता है। ये चारों आयाम मिलकर व्यक्ति की व्यक्तिगत प्रभावशीलता को निर्धारित करते हैं।

शोध के औचित्य का स्पष्टीकरण

शैक्षणिक कार्यों को दक्षता एवं सफलता से पूर्ण करने के लिए शिक्षक का सम्प्रेषण प्रभावी (McCarthy and Carter, 2001) होना चाहिए। अपने अच्छे सम्प्रेषण से शिक्षक कक्षा में शिक्षण-अधिगम को बहुत आसान (Silver F. 1997) बना लेता है । हुराकडली (Hurakadli, 2015) ने अपने शोधकार्य में पाया की लड़कियों की तुलना में लड़कों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता एवं सहज अनुभूति सार्थक रूप से अधिक है। इस शोध अध्ययन में व्यक्तिगत प्रभावशीलता एवं शिक्षकों के प्रेरणादायी व्यवहार (Motivational Behaviour) में धनात्मक सहसंबंध भी प्राप्त

हुआ। तेग्गी (Teggi, R. 2010) द्वारा सम्पादित शोधकार्य में आयु एवं अनुभव का व्यक्तिगत प्रभावशीलता पर प्रथक - प्रथक सार्थक प्रभाव प्राप्त हुआ। मुस्तफा (Mustapha, 1998) के अध्ययन से यह परिणाम प्राप्त हुआ की प्रबंधकों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता सामान्यतः प्रबंधकों की व्यक्तिगत विशेषताओं एवं कार्य की परिस्थितियों (Job Conditions) पर निर्भर करती है। क्वान्ट्स एवं बोगलार्सकी (Kwantes and Boglarsky, 2006) ने छः देशों (कनाडा, हांग कांग, न्यूजीलेंड, दक्षिण अफ्रिका, यूनाइटेड किंगडम एवं अमेरिका) से प्राप्त अभिलेखीय प्रदत्तों पर आधारित अपने अध्ययन में पाया कि संगठनात्मक संस्कृति एवं व्यक्तिगत प्रभावशीलता परस्पर सम्बंधित हैं, तथा कार्मिकों के संतुष्टीकरण एवं व्यक्तिगत प्रभावशीलता में धनात्मक सम्बन्ध होता है। नरसगौड़ा (Narasgouda S. A. 2016) द्वारा संपन्न शोध से प्रकाशित हुआ कि (1) छात्र-अध्यापकों की तुलना में छात्र-अध्यापिकाओं की व्यक्तिगत प्रभावशीलता सार्थक रूप से अधिक होती है, (2) ग्रामीण छात्र-अध्यापकों की तुलना में शहरी छात्रअध्यापकों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता सार्थक रूप से अधिक होती है, (3) व्यक्तिगत प्रभावशीलता एवं शैक्षणिक उपलब्धि परस्पर आश्रित हैं, (4) शैक्षणिक उपलब्धि पर व्यक्तिगत प्रभावशीलता का सार्थक एवं सकारात्मक प्रभाव होता है। टीना (Tina K. B. 2012) ने लाभ केन्द्रित संगठनों के मुख्य विक्रय प्रबंधकों की दक्षताओं के निर्धारण सम्बन्धी अपने शोधकार्य में यह दर्शाया कि व्याक्तिगत प्रभाविकता, विक्रय प्रबंधकों के लिए महत्वपूर्ण आवश्यकता है। रीना एवं जयं (Reena & Jayan, 2012) ने अपने अध्ययन में यह प्रकाशित किया कि कार्यात्मक जीवन की गुणवत्ता (Quality of work life) का व्यक्तिगत प्रभावशीलता पर सार्थक प्रभाव होता है। पंवार एवं गोर्सी (Panwar N. & Gorsy C. 2015) ने सैनिकों के लोकस ऑफ़ कंट्रोल (Locus of Control) एवं व्यक्तिगत प्रभावशीलता सम्बन्धि अपने शोध अध्ययन में यह प्रदर्शित किया कि आंतरिक लोकस ऑफ़ कंट्रोल (Internal Locus of Control) धारण करने वाले सैनिक तनावपूर्ण परिस्थितियों में भी व्यक्तिगत प्रभावशीलता के विभिन घटकों का बखूबी प्रदर्शन करते हैं। वलवलकर (Walwalkar R. 2015) के शोध अध्ययन का शीर्षक इस प्रकार था ‘ क्या कार्मिक की व्यक्तिगत प्रभावशीलता, उसके व्यावसायिक प्रदर्शन को पर प्रभाव रखती है?’ वलवलकर को सांख्यिकीय विश्लेषण के उपरान्त व्यक्तिगत प्रभावशीलता एवं कार्मिक के व्यावसायिक प्रदर्शन में उच्च सहसंबंध प्राप्त

हुआ। नंदिनी, टीना एवं असफिया (Sanyal, N.; Fernandes, T. & Fatima, A., 2016) ने 'शिक्षकों में व्यक्तिगत प्रभावशीलता, संगठनात्मक संस्कृती एवं कार्य सम्बन्धी तनाव' शीर्षक से संपन्न अपने शोधकार्य में संगठनात्मक संस्कृती, व्यक्तिगत प्रभावशीलता एवं कार्य सम्बन्धी तनाव में धनात्मक सहसंबंध प्राप्त किया। खुराना (Khurana, P. 2011) द्वारा संपन्न शोधकार्य में व्यक्तिगत आचार (Personal ethics) एवं व्यक्तिगत प्रभावशीलता में सार्थक धनात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के शोधकर्ता द्वारा उक्त समस्त शोधकार्यों का अध्ययन करने के पश्चात यह पाया गया कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता के सम्बन्ध में शोधकार्यों का अभाव है। यद्यपि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के सम्बन्ध में व्यक्तिगत प्रभावशीलता का अध्ययन एवं उसका विकास अधिक आनुषंगिक प्रतीत होता है।

शोध उद्धेश्य

प्रस्तुत शोध में अध्ययन कर्ता द्वारा अधोलिखित उद्देश्यों का निर्माण किया गया-

1. स्त्री एवं पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. विज्ञान एवं कला अनुशासन के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. शहरी एवं ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएं

प्रस्तुत शोध में निर्मित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अध्ययनकर्ता द्वारा अधोलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया-

1. स्त्री एवं पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. विज्ञान अनुशासन एवं कला अनुशासन के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. शहरी एवं ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध हेतु अध्ययनकर्ता द्वारा विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्श हेतु शिक्षा संस्थान, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर में अध्ययनरत बी. एड. पाठ्यक्रम के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन प्रयोजन-मूलक न्यादर्श पद्धती से चयन किया गया। अध्ययन में कुल 63 शिक्षक प्रशिक्षणार्थी सम्मिलित हुए। वाणिज्य अनुशासन शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को अनुशासनवार अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया गया। न्यादर्श हेतु चयनित शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का लिंग, अनुशासन एवं ग्रामीण/शहरी पृष्ठभूमि-वार विवरण इस प्रकार है -

विभाजन का आधार	श्रेणी	संख्या	योग
1 लिंग	स्त्री	37	63
	पुरुष	26	
2 अनुशासन	कला अनुशासन	27	57
	विज्ञान अनुशासन	30	
3 पृष्ठभूमि	ग्रामीण	32	63
	शहरी	31	

व्यक्तिगत प्रभावशीलता के मापन हेतु आर. के. नायक द्वारा भारतीय परिप्रेक्ष्य के लिए रूपांतरित व्यक्तिगत प्रभावशीलता मापनी का प्रयोग किया गया। इस सूची में जोहरी विंडो के तीन क्षेत्रों क्रमशः अनावृत क्षेत्र (Arena), अंध बिंदु क्षेत्र (Blind spot) एवं संवृत्त क्षेत्र से कुल 15 कथन हैं इन कथनों पर पञ्चबिंदु मापनी के आधार पर प्रतिक्रया दी जाती है।

प्रदत्तों का विश्लेषण

प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण स्वतंत्र t-परिक्षण एवं सहसंबंध गुणांक की सहायता से किया गया। प्रदत्तों का उद्देश्य वार विश्लेषण इस प्रकार है -

1. स्त्री एवं पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना

तालिका क्र. 1: स्त्री एवं पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता की कोटि	t- मान
पुरुष	26	33.38	5.61	61	2.175*
स्त्री	37	29.75	7.07		

* सार्थकता के स्तर 0.05 पर t-मान सार्थक है

तालिका क्र. 1 में स्त्री एवं पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता के प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण स्वतंत्र t-परिक्षण के माध्यम से किया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि स्त्री एवं पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता के माध्य फलांकों का t-मान 2.175 है जो स्वतंत्रता की कोटि 61 के लिए 0.05 सार्थकता के स्तर पर सार्थक है। अतः 0.05 सार्थकता के स्तर पर स्त्री एवं पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर पाया गया। इस अवलोकन के परिप्रेक्ष्य में शोधकर्ता की प्रथम शून्य परिकल्पना "स्त्री एवं पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है" सार्थकता के स्तर 0.05 पर निरस्त की जाती है। पुनः तालिका क्र. 1 के अध्ययन से यह भी स्पष्ट है कि पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता का माध्य फलांक 33.38 है, जो स्त्री शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता के माध्य फलांक 29.75 से अधिक है। परिणामतः यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि स्त्री शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता अधिक होती है।

2. विज्ञान एवं कला अनुशासन के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका क्र. 2: विज्ञान एवं कला अनुशासन के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

अनुशासन	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता की कोटि	t- मान
विज्ञान	30	28.53	8.10	55	2.449*
कला	27	33.14	5.78		

⁎ सार्थकता के स्तर 0.05 पर t-मान सार्थक है

तालिका क्र. 1 में विज्ञान एवं कला अनुशासन के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता के प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण स्वतंत्र t-परिक्षण के माध्यम से किया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि विज्ञान एवं कला अनुशासन के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता के माध्य फलांकों का t-मान 2.449 है जो स्वतंत्रता की कोटि 55 के लिए 0.05 सार्थकता के स्तर पर सार्थक है। अतः 0.05 सार्थकता के स्तर पर विज्ञान एवं कला अनुशासन के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर पाया गया। इस अवलोकन के परिप्रेक्ष्य में शोधकर्ता की द्वितीय शून्य परिकल्पना "विज्ञान एवं कला अनुशासन के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है" सार्थकता के स्तर 0.05 पर निरस्त की जाती है। पुनः तालिका क्र. 2 के अध्ययन से यह भी स्पष्ट है कि कला अनुशासन के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता का माध्य फलांक 33.14 है, जो विज्ञान अनुशासन के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता के माध्य फलांक 28.53 से अधिक है। परिणामतः यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि विज्ञान अनुशासन के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में कला अनुशासन के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता अधिक होती है।

3. ग्रामीण एवं शहरी प्रष्ठभूमि वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका क्र. 3: ग्रामीण एवं शहरी प्रष्ठभूमि वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

प्रष्ठभूमि	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता की कोटि	t- मान
ग्रामीण	26	29.07	5.18	61	2.761⁎
शहरी	37	34.14	7.32		

⁎ सार्थकता के स्तर 0.05 पर t-मान सार्थक है

तालिका क्र. 3 में ग्रामीण एवं शहरी प्रष्ठभूमि वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता के प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण स्वतंत्र t-परिक्षण के माध्यम से किया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि ग्रामीण एवं शहरी प्रष्ठभूमि वाले

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता के माध्य फलांकों का t-मान 2.761 है जो स्वतंत्रता की कोटि 61 के लिए 0.05 सार्थकता के स्तर पर सार्थक है। अतः 0.05 सार्थकता के स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी प्रष्ठभूमि वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर पाया गया। इस अवलोकन के परिप्रेक्ष्य में शोधकर्ता की तृतीय शून्य परिकल्पना "ग्रामीण एवं शहरी प्रष्ठभूमि वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है" सार्थकता के स्तर 0.05 पर निरस्त की जाती है। पुनः तालिका क्र. 3 के अध्ययन से यह भी स्पष्ट है कि शहरी प्रष्ठभूमि वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता का माध्य फलांक 34.14 है, जो ग्रामीण प्रष्ठभूमि वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता के माध्य फलांक 29.07 से अधिक है। परिणामतः यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि ग्रामीण प्रष्ठभूमि वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में शहरी प्रष्ठभूमि वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता अधिक होती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में परिकल्पना के परिक्षण के उपरान्त अधोलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं

1. स्त्री शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता अधिक होती है।
2. विज्ञान अनुशासन के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में कला अनुशासन के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता अधिक होती है।
3. ग्रामीण प्रष्ठभूमि वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में शहरी प्रष्ठभूमि वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तिगत प्रभावशीलता अधिक होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

Hurakadli, B. M. (2016). A study of relationship between motivational behaviour and personal effectiveness of secondary school teachers. *International Educational E-Journal, 4*(4), 157-166.

Jasman, K.P. (2008). Personal effectiveness and organisational culture. *Journal of International Management, 19* (7), pp.86-99

Khurana, P. (2011). *Role of ethics in personal, team and organizational effectiveness* (Unpublished doctoral dissertation). University of Delhi, New Delhi.

Kwantes, C. T., & Boglarsky, C. A. (2007). Perceptions of organizational culture, leadership effectiveness, and personal effectiveness across six countries. *Journal of International Management*, *13* (2), 204-213.

McCarthy, M. J. and Carter, R. A. (2001) ‘Ten criteria for a spoken grammar', in Hinkel E. and Fotos S. (eds) New Perspectives on Grammar Teaching in Second Language Classrooms, Mahwah, NJ: Lawrence Erlbaum Associates, 51-75.

Narasgouda, S. A. (2016). *A Study of Emotional Intelligence Self Esteem and Personal Effectiveness in Relation to Academic Achievement of Student Teachers of Colleges of Education* (Unpublished doctoral dissertation). Karnatak University, Dharwad.

Pathak, D. and Shrivastava, S. (2010). Variables Affecting Personal Effectiveness: An Empirical Study on B-school Students. *Drishtiko: A Management Journal, 2* (1), 257-278.

Panwar, N and Gorsy, C. (2015). Personal effectiveness and locus of control among military personnel. *IAHRW International Journal of Social Sciences, 3*(4), 456-460.

Reena and Jayan (2012). Role of quality of work life on the job attitude and personal effectiveness of engineering college teachers. *South Asian Academic Research Journals, 2*(6), 121-134.

Rickers-Ovsiankina, M. A. and Kusmin, A. A. (1958). Individual Differences in Social Accessibility. *Psychological Reports, 4*, 391-406.

Sanyal, N.; Fernandes, T. & Fatima, A. (2016). Personal effectiveness, organizational culture and work-related stress among teachers. *IRA-International Journal of Education & Multidisciplinary Studies, 4* (2), 251-270.

Teggi, R. (2010). *A study of leadership behaviour of principals of colleges of education in relation to job satisfaction personal effectiveness and organizational culture* (Unpublished doctoral dissertation). Karnatak University, Dharwad.

Tina, K. B. (2012). *Determining Competencies for Frontline Sales Managers in For-Profit Organizations* (Unpublished doctoral dissertation). Texas A&M University, Texas.

Veeranagoudra, S. (2011). *A study of job satisfaction of secondary school teachers in relation to personal effectiveness teachers' attitude and organizational culture* (Unpublished doctoral dissertation). Karnatak University, Dharwad.

Walawalkar, R. (2015). Does personal effectiveness of an employee affect on-the-Job performance? *International Journal of Research in Organizational Behavior and Human Resource Management, 3*(3), 72-81.